Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

भारतीय संगीत एवं काव्य में छन्द एवं लय का महत्व एंव उपयोगिता

PROF. RAJESH SHAH[1] & SHIVAM MISHRA[2]

1 Professor, Department of Instrument Music, Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.)

2 Research Scholar, Department of Instrument Music, Banaras Hindu University, Varanasi (U.P.)

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय संगीत एवं काव्य में अंतर्निहित छन्द एवं लय तत्वों को प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। भारतीय संगीत एवं काव्य में छंद एवं लय का महत्त्वपूर्ण स्थान हमेशा से ही रहा है। छंद और लय संगीत एवं काल की सुन्दरता में और बढ़ोत्तरी प्रदान करने का कार्य करते हैं। यही लय काव्य में छन्द का रूप धारण करता है। संगीत एवं काव्य विधान के लिए लययुक्त व्यवस्था का नाम ही छंद है। काव्य एवं संगीत की रचनाओं को अत्यधिक पुष्ट करने का कार्य छंद एवं लय तत्वों की उसमें विद्यमान होता ही है जैसा कि काव्य साहित्य के ग्रन्थों एवं संगीत की रचनाओं में प्रत्यक्ष रूप में देखा या सुना जा सकता है।

बीज शब्द-भारतीय संगीत, काव्य, छन्द, लय।

भूमिका

छन्द शब्द भिन्न-भिन्न अर्थों के लिए प्रयुक्त किया जाता है। 'वेद' का भी पर्यायवाची नाम छन्दस् है। सामान्य अर्थ में वर्णों और मात्राओं की गेय व्यवस्था को छन्द कहा जाता है। इसी अर्थ में पद्य शब्द का प्रयोग भी किया है। पद्य अधिक व्यापक अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। किसी भी भाषा में शब्द और शब्दों में वर्ण तथा स्वर सन्निहित रहते हैं। इन्हीं को एक निश्चित विधान से सुगठित व सुव्यवस्थित करने को 'छन्द' की संज्ञा दिया जाता है।

छन्द शास्त्र के अधिक पुष्ट होने का कारण यह भी है कि यह गणित पर आधारित होता है। छन्द शास्त्र के ग्रन्थों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि जहाँ एक तरफ प्रस्तार आदि के माध्यम से आचार्य गण छन्दों को विकसित करते रहे वहीं दूसरी ओर कवि गण अपनी ओर से छन्दों में किंचित् परिवर्तन कर नवीन छन्दों की रचना भी करते रहे हैं जिनका छन्द शास्त्र के ग्रन्थों में कालान्तर में समावेश हो गया। छन्द शास्त्र की उत्पत्ति के सन्दर्भ में अनेक किवदन्तियाँ प्रचलित है, कुछ विद्वानों के अनुसार आदि कवि वाल्मीकि ने अपने ग्रन्थ रामायण में अनुष्टुप छन्द का प्रयोग किया 'मा निषाद प्रतिष्णं त्वं गमः शाश्वती समाः यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधिः काममोहितं' इस किंवदन्ती को प्रमाणिक मान लिया जाए तो छन्द की रचना पहले हुई और छन्द शास्त्र उसके पश्चात् आया। दूसरी किवदन्ति के अनुसार छन्द शास्त्र के आदि आविष्कर्ता भागवान् शेष है। कुछ विद्वानों के मतानुसार 'भगवान शेष' नामक कोई आचार्य थे जिनके विषय में वर्तमान समय में कुछ विशेष ज्ञान और सूचना प्राप्त नहीं है। एक किवदन्ती के अनुसार-शेष ने अवतार लेकर पिंगलाचार्य के रूप में छन्द सूत्र की रचना की जो पिंगल शास्त्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

छन्द शास्त्र के रचनाकारों को 2 श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है, पहला आचार्य श्रेणी, जो छन्द शासन का शास्त्रीय निरूपण करते है और दूसरी कवि श्रेणी, छन्द शास्त्र पर पृथक-पृथक रचनाएँ प्रस्तुत करती है। सामान्यतः लय को बताने के लिए छन्द शब्द का प्रयोग किया जाता है। विशिष्ट अर्थों या गीत में वर्णो की संख्या और स्थान से सम्बन्धित नियमों को छन्द कहते है। जिनसे काव्य में लय और रंजकता आती है। छोटी-बड़ी ध्वनियाँ, लघु-गुरू उच्चारणों के क्रमों में मात्रा

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

बतलाती है और जब किसी काव्य रचना में ये एक व्यवस्था के साथ सामंजस्य प्राप्त करती है, तब उसे शास्त्रीय नाम दे दिया जाता है और लघु-गुरू मात्राओं के अनुसार वर्णों की यह व्यवस्था एक विशिष्ट छन्द कहलाने लगती है।

समस्त वाक् व्यवहार का मूल ध्वनि है। जिसे शब्द, नाद, वाग् आदि से भी सम्बोधित किया जाता है। इसके भी मुख्य रूप से 2 भेद बतलाए गए है-(प) नादात्मिका (पप) वर्णात्मिका। इनसे संगीत और काव्य का प्रादुर्भाव होता है। स्वर एवं काल नाद के ही दो रूप हैं और जब इनमें काल अनियमित होता है तो समान्य व्यवहार कहलाता है तथा जब नियमित गति का रूप लेता है तो संगीत के ताल और छन्द का उदय होता है। संगीत में वाक् तत्व स्वर के रूप में एवं काल तत्व ताल, लय के रूप में व्यक्त होता है। भरत ने व्यापक रूप में वाक् तत्व को शब्द और काल तत्व को छन्द कहा है।

छन्द हीनो न श्ब्दोऽस्ति नच्छन्द शब्द वर्जितम्।

(भरतकृत नाट्य शास्त्र)

कोई शब्द या ध्वनि छन्द रहित नहीं और न ही कोई छन्द शब्द रहित है इसका प्रमुख कारण यह है कि ध्वनि काल के बिना व्यक्त नही होती तथा काल का ज्ञान ध्वनि के बिना सम्भव नहीं है। हमारी संस्कृति के आधार चारो वेद ब्राह्मण ग्रन्थ, संहिता, उपनिषद्, रामायण महाकाव्य, रामचरित मानस आदि सभी छन्दोमय माने गये है, तो संगीत कैसे छन्द से उछूता रह सकता है। वैदिक और लौकिक संगीत, गांधर्व, मार्गी देशी, इन समस्त विधाओं में छन्दों का प्रयोग हुआ है। वेद की ऋचाओं का सुरक्षित रह पाना छन्दों में बँध कर ही सम्भव हो सका है। छन्द की परिभाषा, 'छन्द प्रभाकर' ग्रन्थ में कुछ इस तरह से वर्णित है

मत वरण यति गति नियम, अन्तहिं समता बंद।

जा पद रचना के मिलै, भानू गनत सोई छन्द।।

उस वाक्यों को योजना को छन्द कहा जाता है, जो अक्षरों, मात्राओं और यति आदि के नियम विशेष के अनुसार निबद्ध की गयी हो। गायन-वादन एंव नृत्य मंे छन्दों का प्रयोग निरर्थक शब्दों के माध्यम से होता है, जो आनन्दवर्धक भी प्रतीत होता है। तराना में तेनक जैसे निरर्थक शब्द का प्रयोग किया जाता है जो किसी-न किसी छन्द में बद्ध ही रहते हैं। कलाकार सितार, सरोद, के वादन में मिजराव या जवा के प्रयोग से सुन्दर बोलो के संयोजन से कितने ही छंन्दों का प्रदर्शन करते हैं। भारतीय संगीत के बारे में कहा जाता है कि श्रुति इसकी जननी और लय इसके जनक है। संगीत की 22 श्रुतियों के संयोजन से ही सप्त स्वर बनते है तथा इन्हीं सात स्वरों से सप्तक का जन्म होता है। यही श्रुतियाँ संगीत की जननी होने का प्रमाण देती है।

सामन्यतया लय शब्द के दो अर्थ हैं- (प) शाब्दिक (पप) पारिभाषिक, लय शब्द का शाब्दिक तात्पर्य-संयोग, एकरूपता, मिलन है। आम बोल-चाल में भी जब हमारा मस्तिष्क किसी भी विचार में लीन होता है तो हम कह देते है कि वह लय की स्थिति में है। इस लय शब्द का प्रयोग अलग-अलग संदर्भों और अर्थों में किया जाता है। संगीत के सन्दर्भ में लय को तालों एवं काल माप का आधार माना जाता है। लय संगीत और काव्य में अपनी लयात्मकता के कारण सरसता, सौन्दर्यता, एवं माधुर्य आदि भावों को तो साथ लाती ही है, भक्ति और लोच भी उत्पन्न कर देता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

तालस्त लप्रतिष्ठाय मिति धाते र्धञिस्मृतः।

गीतं, वाद्यं तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठितम।।

(संगीत रत्नाकर)

गीत, वाद्य एवं नृत्य ये तीनों ही ताल पर स्थापित है। जिस प्रकार से मजबूत एवं टिकाऊँ घर के लिए मजबूत तल या मजबूत नीवं की जरूरत होती है उसी तरह संगीत की तीनों विधाओं को मूल लय एवं ताल की आवश्यकता होती है। अखण्ड काल गति को छंद या पदों में विभाजित करने के जो प्रयोग हुए, उन्हें ही ताल की संज्ञा प्रदान की गयी। संगीत के स्वरों को गति यथार्थतः छंद एवं ताल ही प्रदान करते है। ताल गायन, वादन एवं नृत्य को एक निश्चित समय के बंधन में बाँधता है। ताल गायन, वादन एवं नृत्य को अनुशासित कर उसे सुगणित, स्थायित्व एंव चमत्कारित कर श्रोताओं को बिभोर करने का कार्य करता है। ताल के द्वारा ही प्राचीन एवं आधुनिक कालीन संगीत को स्वर लिपिबद्ध कर भविष्य के लिए सुरक्षित रखना संभव हो पाया है। रसोत्पत्ति हेतु तालों की विभिन्न गतियों का बड़ा महत्व है, ताल की गति के फलस्वरूप ही संगीत के क्रमिक अरोह, अवरोह, विराम आदि और अत्यधिक प्रभावोत्पादक हो जाते हैं।

ईश्वर द्वारा सृजित सकल ब्रह्मण्ड में समय क्रम की जो निश्चित गति है, वही संगीत में ताल बन कर उसे उपयोगी रसपूर्ण और स्थायित्व स्वरूप प्रदान करती है। तीनों को यदि पृथक-पृथक रूप में देखे तो पता चलता है कि ये तीनों पृथक नही वरन् एक दूसरे के परस्पर पूरक हैं। छंद-लय, छंद-ताल, लय-ताल ये तीनों ही आपस में एक दूसरे से सामंजस्य रखते है जिनकी आपसी सहमति संगीत में अहम् स्थान रखती है।

छंद का मूल लक्षण लयबद्धता है; लय के बिना संगीत की सत्ता असम्भव है। लय जब निश्चित स्वरूप में व्यक्त होता है तो छन्द की उत्पत्ति होती है। चाहे वह सार्थक शब्द हों या न हो, जो स्थान छन्द और लय के मध्य है वही सम्बन्ध संगीत और ताल के मध्य भी है। छंद भाषा को गति प्रदान करता है, तथा स्वरों को गति प्रदान ताल के द्वारा होती है।

भारतीय छन्द योजना ही अपने मूल में लयवद्ध है। छन्दों के नियम इस प्रकार है कि वे स्वतः लय में उतर आते है। संगीत का आधार लय है, गायक एंव वादक लय के सहयोग से ताल में पदों या गतों को विभाजित करने के बाद स्वरों में बाँधकर गाते-बजाते हैं। लय की समानता के कारण ही छन्दों में बँधी हुई कविता में जो माधुर्य तथा ओजमयी अनुभूति होती है वही रसानुभूति संगीत की रचनायों को ताल में निबद्ध करने के बाद प्रस्फुटित होती है।

जिस प्रकार से ताल के द्वारा संगीत को अनुशासित किया जाता है उसी प्रकार छंद से कविता अनुशासित होती है। छंद के मुख्य 2 प्रकार के भेद बतलाये गये है (प) मात्रिक छन्द (पप) वर्णिक छन्द। जो छंद मात्राओं पर आधारित होता है उसे मात्रिक छंद, तथा वर्ण पर आधारित छंद वर्णिक छन्द कहलाता है। उदाहरणार्थ चैपाई, हरिगीतिका, दोहा, रोला, कुन्डलियाँ, छप्पय इत्यादि मात्रिक छंद और, मंदक्रांन्त, धनाक्षरी, तोटक, सबैया इत्यादि वर्णिक छंद के अंतर्गत आते हैं। यदि दूसरे शब्दों में कहा जाये जब लघु-गुरू अथवा ह्रस्व-दीर्घ इकाइयों के आधार पर लय को जब विशेष आकार प्रदान किया जाता है तो उसे छंद ही कहा जाता है। छन्द का मूल लक्षण लयबद्धता ही है, जो सार्थक रचना में तो होती है साथ ही पदरहित या निरर्थक रचनाओं में भी परिलक्षित होती है।

ध्रुवपद गायन से पूर्व प्रबन्ध गायन की प्रचलन था। अनेकों ऐसे प्रबन्ध थे जो छन्दबद्ध होते थे, जैसे- तोटक, दंडक, झम्पट, सिंहपद, गाथा, आर्या आदि ऐसे अनेकों प्रबन्ध है जो अपने नाम के छन्दों में गाये जाते थे। इन सब के अलावा

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

भी अन्य प्रबन्धों में अलग-अलग छन्दों का प्रयोग किया जाता था। जयदेव के गीत-गोविन्द ग्रन्थ में भी विभिन्न छन्दों का उपयोग वर्णित है, यह ग्रन्थ संगीत एंव काव्य दोनों ही दृष्टि से महत्वपूर्ण है। कलात्तर में प्रबन्ध की जगह धुरपद ने ले लिया इसका प्रमुख कारण यह भी था कि प्रबन्ध के अत्यधिक लंबे पद, पद की क्लिष्टता और पद के बजाय स्वर तत्व पर रूचि-परिवर्तन मुख्य कारण है। प्रबन्ध की तुलना में ध्रुपद के पद संक्षिप्त, सरल, तथा ताल में भिन्नता एवं अधिक गेय तत्व होने के कारण ज्यादा प्रसिद्धि को प्राप्त कर गया। धुरपद के पद धनाक्षरी छंद में गाये-जाने लगे। धनाक्षरी के 31-31 अक्षरों के 4 चरण ध्रुपद के 4 खंण्ड स्थाई, अंतरा, संचारी और आभोग बनें। इन खंडों में 8-8-8-7 अक्षरों के 4-4 आवर्तन बनें। धुरपद के साथ 12 मात्रा बाले ताल अर्थात् चार ताल का प्रयोग होता था जिसका मतलब यह हुआ कि धनाक्षरी छन्द को चार ताल में लाने के लिये कुछ कर्षण अवश्य करना पड़ा होगा। धनाक्षरी छंद के अक्षरों का कर्षण कर झपताल में भी गाने योग्य बनाया जा सकता है। अलंकारों में छन्द की अनुभूति जरूर होती है। अलंकारों में छन्दों के प्रयोग का विशेष प्रचार नहीं है और न ही कोई संगीतज्ञ कलाकार छन्द को ध्यान ने रख कर अलंकार की रचना करते हैं।

निष्कर्ष

ध्वनि के मुख्य 2 तत्व है- (प) स्वर तत्व (पप) लय तत्व। स्वर तत्व संगीत एवं काव्य के रूप में अभिव्यक्त होता है, और लय तत्व ताल और छन्द के रूप में। यही कारण है कि संगीत एवं काव्य में तथा छन्द और ताल में घनिष्ठतम सम्बन्ध है। बोलचाल में स्वर एवं लय अनियमित होते है और इसी के विपरीत संगीत के अंतर्गत लय-ताल नियमित होते हैं। संगीत में जो स्थान ताल को प्राप्त है वही स्थान काव्य में छन्द को प्राप्त है। इस प्रकार स्पष्ट रूप से कह सकते है कि ताल संगीत का एवं छन्द काव्य का मापक है।

संगीत में लय और ताल का बहुत गहरा नाता है, जैसे- सूरज चाँद, धरती, नक्षत्र इत्यादि में सब अपनी-अपनी नियत गति या लय से चलायमान है, उसी प्रकार से संगीत में भी एक समान गति विद्यमान होती है, जिससे संगीत के तीनों पक्ष अपनी विशेषता को व्यक्त करने में सफल हो पाते हैं। यदि ताल शरीर है तो लय उसकी आत्मा है। केवल, लय छंद ताल एवं स्वर युक्त निवद्ध संगीत ही आनदानुभूति करा सकता है।

संदर्भ सूची

1 Goonaliake, Susantha (1998), Toward a Global Science Indian University Press, pg. 126
2 Mukherjee, Sujit, Dictionary of Indian Literature Beginnings. pg. 204
3 शर्मा, स्वतंत्र, (2010), सौन्दर्य रस एवं संगीत, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, प्रयागराज, उ0प्र0
4.माथुर, मीरा (1999), संगीतशास्त्र परामर्श: मीरा पब्लिकेशन, राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ, उ0प्र0
5 शास्त्री, वासुदेव (1968), संगीतशास्त्र, हिन्दी समिति सूचना विभाग, लखनऊ, उ0प्र0
6.श्रीवास्तव, हरिश्चन्द्र (2018), राग परिचय, भाग-4, संगीत सदन प्रकाशन, 134 साउथ मलाका, प्रयागराज, उ0प्र0
7 चौधरी, सुभद्रा (2004), भारतीय संगीत में निबद्ध, राधा पब्लिकेशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली
8 जुलाई 2007, संगीत पत्रिका, संगीत कार्यालय, हाथरस (उ0प्र0)
9 सिन्हा, सुरेखा (2011), संगीत चिन्तन, पंचशील प्रकाशन, जयपुर

साक्षात्कार

1.मिश्र, रामचरण (प्रधानाध्यापक), माधव महाविद्यालय, खजुरीताल, सतना, म0प्र0, दिनांक-20.08.2021
2.विजय जी, (पखावजी), बाबा पागलदास जी के शिष्य, अयोध्या, फैजाबाद, दिनांक-23.07.2021